

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
किला भवन, इंदौर

“दूसरों की सेवा
ही ईश्वर की
सेवा है।”



सेवा से हृदय शुद्ध
होता है और अध्यात्म
हमारे कर्मों को
दिशा देता है।

सेवा संकल्प अभियान

नमो कहानी संकलन



करुणा

अनुशासन

निस्वार्थता

आंतरिक शांति

सेवा संदेश



सच्ची आध्यात्मिकता केवल
प्रार्थना में नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा,
करुणा और समस्त समाज के
कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता में है।



प्रेमपूर्वक सेवा करें



बिना अपेक्षा सहायता करें



प्रकृति का सम्मान करें



सत्यनिष्ठ और करुणामय बनें



एक बेहतर और संवेदनशील
समाज के लिए कार्य करें



17/09/2026 से
17/10/2026



संदेश

सेवा भारतीय संस्कृति की वह महान परंपरा है, जो मानव को मानव से जोड़ती है। सेवा केवल किसी की सहायता करना नहीं, बल्कि संवेदना, करुणा, समर्पण और उत्तरदायित्व के साथ समाज के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करना है।

“सेवा संकल्प अभियान” के माध्यम से हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय परिवार में सेवा-भाव, निष्ठा, सत्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना है। हमारा विश्वास है कि छोटे-छोटे सेवा कार्य भी समाज में सकारात्मक परिवर्तन की मजबूत नींव रख सकते हैं।

महाविद्यालय की छात्राओं, प्राध्यापकों एवं समस्त कर्मचारियों ने इस अभियान से सक्रिय रूप से जुड़कर “सेवा से समाज, समाज से राष्ट्र” की भावना को साकार करने का प्रयास किया।

आइए, हम सभी मिलकर सेवा को अपने जीवन का संकल्प बनाएं और एक संवेदनशील, सहयोगी एवं संस्कारित समाज के निर्माण में अपना योगदान दें।

डॉ. बी. डी. श्रीवास्तव

प्राचार्य



नमो कहानी

आध्यात्मिकता से सेवा तक – नरेंद्र मोदी जी की प्रेरणादायी यात्रा

 वडनगर के एक साधारण बालक नरेंद्र के मन में बचपन से ही देश और समाज के प्रति कुछ करने की भावना थी। स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने आत्मचिंतन, अनुशासन और जीवन के उद्देश्य को समझने की दिशा में कदम बढ़ाए।

 युवावस्था में भारत भ्रमण और हिमालय में साधना एवं एकांत के अनुभवों ने उनके जीवन-दृष्टिकोण को प्रभावित किया। समय के साथ उनकी आध्यात्मिक सोच समाज और राष्ट्र की सेवा से जुड़ती गई।

 उनकी जीवन-यात्रा हमें यह संदेश देती है कि आध्यात्मिकता केवल स्वयं की साधना नहीं, बल्कि मानवता की सेवा और समाज के कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित करना भी है।

 **प्रेरक संदेश**

“जन सेवा ही प्रभु सेवा है।”

 **मोरल / सीख**

सच्ची आध्यात्मिकता वही है,
जो हमारे भीतर की अच्छाई को दूसरों की
सेवा में बदल दे।

 ध्यान मन को शांत करता है,
सेवा मन को विशाल बनाती है,
और समर्पण जीवन को सार्थक बनाता है।

नमो कहानी वाचन

<https://youtu.be/GIV3eIMu9C0?si=Qm78z2pnUWkrDMih>

नमो कहानी

श्री नरेंद्र मोदी के सृजनात्मक वर्षों ने उन्हें शुरू से ही कठिन परिश्रम करना सिखाया जिसके फलस्वरूप ही वे अपनी पढ़ाई तथा पढ़ाई के बाद के जीवन के बीच तालमेल बिठा पाए और अपने परिवार की चाय की दुकान पर काम करने के लिए समय निकला पाए क्योंकि उनके परिवार को दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करने के लिए संघर्ष करना पड़ता था।

उनके स्कूल के दिनों के मित्र बताते हैं कि वे बचपन से ही बहुत मेहनती रहे। वे चर्चा करने के लिए तत्पर रहते थे तथा पुस्तकें पढ़ने के लिए उत्सुक रहते थे। उनके सहपाठी बताते हैं कि किस तरह श्री मोदी स्थानीय पुस्तकालय में घंटों स्वाध्याय किया करते थे। बचपन में उन्हें तैराकी का भी शौक था।

बचपन से ही श्री नरेंद्र मोदी के विचार तथा सपने उनके हमउम्र बच्चों के विचार से बिल्कुल अलग थे। शायद यह वड़नगर का ही प्रभाव था क्योंकि यह सदियों पहले बौद्ध शिक्षा तथा अध्यात्म का जीवंत केंद्र था। बचपन में भी वे समाज में बदलाव लाने के प्रबल पक्षधर थे। वे स्वामी विवेकानंद के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित थे जिससे उनके जीवन में अध्यात्म की नींव पड़ी और भारत को जगत-गुरु बनाने के स्वामी जी के सपने को पूरा करने की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिली।

17 वर्ष की आयु में उन्होंने संचूर्ण भारत की यात्रा करने के लिए घर छोड़ दिया। दो वर्षों तक उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों का पता लगाने के लिए भारत के विशाल भू-खंड की यात्रा की। जब वे घर लौटे तब वे एक अलग ही व्यक्ति थे जिसे यह स्पष्ट पता था कि उन्हें जीवन में कौन-सा लक्ष्य हासिल करना है।

वे अहमदाबाद चले गए और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ गए। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है, जो भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य कर रहा है। 1972 में अहमदाबाद में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रचारक बनने के बाद से श्री नरेंद्र मोदी की कठिन दिनचर्या है। उनकी दिनचर्या प्रातः 5 बजे शुरू होती है और देर रात तक चलती है। 1970 के दशक के आखिरी दिनों ने यह भी देखा कि युवा नरेंद्र मोदी ने भारत में आपातकाल के दौरान दमित किए जा रहे प्रजातंत्र की पुनर्बहाली के लिए चलाए जा रहे आंदोलन में हिस्सा लिया।

1980 के दशक में संघ में अलग-अलग जिम्मेदारियां लेते हुए श्री नरेंद्र मोदी अपने संगठन कौशल के नमूने के साथ एक संगठक के रूप में सामने आए। 1987 में नरेंद्र मोदी के जीवन का एक अलग अध्याय तब शुरू हुआ जब उन्होंने गुजरात में भारतीय जनता पार्टी के महासचिव के रूप में कार्य करना शुरू किया। अपने पहले कार्य में श्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद के नगर निगम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को पहली बार जीत दिलाई। उन्होंने 1990 के गुजरात विधान सभा चुनावों में भी भारतीय जनता पार्टी को कांग्रेस के बाद दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनाई। 1995 के विधान सभा चुनावों में श्री नरेंद्र मोदी के संगठन कौशल के फलस्वरूप भारतीय जनता पार्टी का मत प्रतिशत बढ़ा और पार्टी ने 121 सीटें जीतीं।

नमो कहानी वाचन

<https://youtu.be/UjRT0-ohXwE?si=reeHlaLnTTmCwc8Y>



गौतम बुद्ध की प्रेरणादायक कहानी

क्रोध का उत्तर

एक बार गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक गाँव से गुजर रहे थे। वहाँ एक व्यक्ति बुद्ध से बहुत नाराज़ था। वह उनके पास आया और क्रोध में उन्हें बहुत बुरा-भला कहने लगा। बुद्ध शांत भाव से उसकी बातें सुनते रहे। उनके चेहरे पर न क्रोध था, न दुख।

कुछ देर बाद वह व्यक्ति थक गया और चुप हो गया। बुद्ध ने मुस्कुराकर पूछा—

“यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को कोई वस्तु देना चाहे और सामने वाला उसे स्वीकार न करे, तो वह वस्तु किसके पास रहती है?”

व्यक्ति ने कहा, “देने वाले के पास ही रहती है।”

बुद्ध ने कहा—

“इसी प्रकार, तुम्हारे द्वारा दिया गया क्रोध और अपशब्द मैंने स्वीकार नहीं किए। इसलिए वे तुम्हारे पास ही रह गए।”

यह सुनकर वह व्यक्ति बहुत लज्जित हुआ। उसने बुद्ध से क्षमा माँगी और उनके चरणों में बैठ गया।

कहानी की सीख

**क्रोध का उत्तर क्रोध से देने पर समस्या बढ़ती है,
लेकिन शांति और क्षमा से क्रोध समाप्त हो सकता है।**

“दूसरों के व्यवहार पर हमारा नियंत्रण नहीं,
लेकिन अपनी प्रतिक्रिया पर हमारा नियंत्रण अवश्य है।”

नमो कहानी वाचन

वृत्तचित्र प्रदर्शन :- <https://youtu.be/TN-h9aIG3-E?si=XpmRky-7r9n6BYOM>

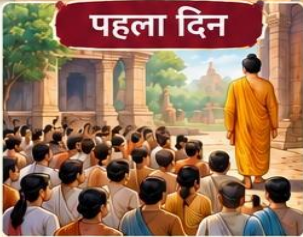


नमो कहानी

यहाँ वो ही टिक सकेगा जिसमें धैर्य हो

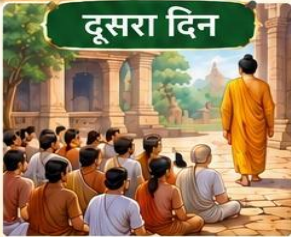
बुद्ध को एक सभा में भाषण करना था । जब समय हो गया तो बुद्ध आए और बिना कुछ बोले ही वहाँ से चल गए ।
तकरीबन एक सौ पचास के करीब श्रोता थे । दूसरे दिन तकरीबन सौ लोग थे पर फिर उन्होंने ऐसा ही किया बिना बोले चले गए ।
इस बार पचास कम हो गए ।

पहला दिन



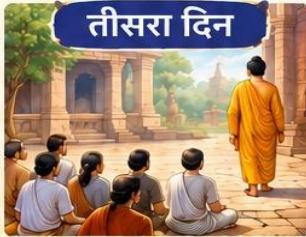
तकरीबन एक सौ पचास के करीब श्रोता थे ।
बुद्ध आए और बिना कुछ बोले ही वहाँ से चल गए ।

दूसरा दिन



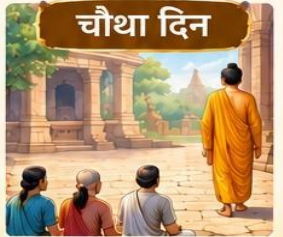
दूसरे दिन तकरीबन सौ लोग थे पर फिर उन्होंने ऐसा ही किया बिना बोले चले गए ।
इस बार पचास कम हो गए ।

तीसरा दिन



तीसरा दिन हुआ तो साठ के करीब लोग थे ।
महामानव बुद्ध आए, इधर – उधर देखा और बिना कुछ कहे वापिस चले गए ।

चौथा दिन



चौथा दिन हुआ तो कुछ लोग और कम हो गए, तब भी नहीं बोले ।

पाँचवाँ दिन



जब पाँचवाँ दिन हुआ तो देखा सिर्फ चौदह लोग थे ।
महामानव बुद्ध उस दिन बोले और चौदहों लोग उनके साथ हो गए ।

प्रश्न

किसी ने महामानव बुद्ध को पूछा आपने चार दिन कुछ नहीं बोला । इसका क्या कारण था ।

बुद्ध का उत्तर

मुझे भीड़ ज़हीं काम करने वाले चाहिए थे ।
यहाँ वो ही टिक सकेगा जिसमें धैर्य हो ।
जिसमें धैर्य था वो रह गए ।

कहानी से सीख (Moral of the Story)

- केवल भीड़ ज्यादा होने से कोई धर्म नहीं फैलता है । समझने वाले चाहिए ।
- तमाशा देखने वाले रोज इधर-उधर ताक-झाँक करते हैं ।
- समझने वाला धीरज रखता है ।
- कई लोगों को दुनिया का तमाशा अच्छा लगता है ।
- समझने वाला शायद एक हजार में एक ही हो, ऐसा ही देखा जाता है ।
- धैर्य, लगन और समझ ही सच्चे मार्ग पर टिकाए रखती है ।

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन <https://share.google/VOQvhOFY2pBPv96fu>

दिनांक :-22.9.2026



नमो कहानी

जनकल्याण योजनाएँ

सेवा से सशक्तिकरण तक

भारत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएँ नागरिकों के स्वास्थ्य, आवास, रोजगार, किसान कल्याण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सह्यता जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य हर पात्र नागरिक तक सरकारी सहायता और सेवाएँ पहुँचाना और उन्हें अवसर, सुरक्षा तथा आत्मनिर्भरता से जोड़ना है।



प्रधानमंत्री आवास योजना

पात्र परिवारों को पक्का आवास उपलब्ध कराने की दिशा में पहल।





प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि

पात्र किसानों को आय सहायता प्रदान करने की योजना।





आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

पात्र परिवारों को अस्पताल में कैशलेस स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्ध कराने की पहल।





प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

पात्र परिवारों की महिलाओं को स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन (LPG) से जोड़ने का प्रयास।





प्रधानमंत्री जन-धन योजना

वित्तीय सेवाओं और बैंकिंग व्यवस्था तक पहुँच बढ़ाने की पहल।





जल जीवन मिशन

ग्रामीण घरों तक नल से जल पहुँचाने का अभियान।





प्रधानमंत्री स्वनिधि

स्ट्रीट वेंडर्स को आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण सुविधा उपलब्ध कराने की योजना।





महिला एवं बाल कल्याण योजनाएँ

महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण एवं सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम।



नमो संदेश

“जनकल्याण तभी सार्थक है, जब विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और वह सम्मान के साथ आत्मनिर्भर जीवन जी सके।”
— नरेंद्र मोदी

 सेवा

 सुरक्षा

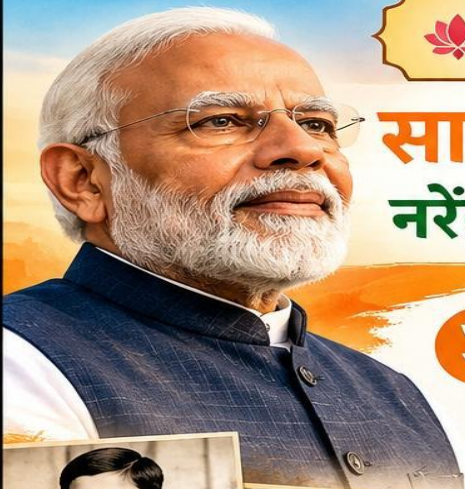
 सशक्तिकरण

 आत्मनिर्भरता

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन <https://youtu.be/LVprvdEIWIA?feature=shared>

दिनांक:-23.9.26



नमो कहानी

सादगी से शिखर तक – नरेंद्र मोदी जी की जीवनशैली



सादगी और अनुशासन का जीवन

नरेंद्र मोदी जी का जीवन अपनी सादगी, अनुशासन, परिश्रम और आत्मसंयम के लिए जाना जाता है। उनका व्यक्तित्व यह संदेश देता है कि बड़ा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए जीवन में दिखावे से अधिक समर्पण, अनुशासन और निरंतर कर्म का महत्व होता है।

कठिन परिस्थितियों से मिली शक्ति

बचपन से ही कठिन परिस्थितियों में पले-बढ़े नरेंद्र मोदी जी ने श्रम और संघर्ष को जीवन का हिस्सा बनाया। साधारण परिवेश ने उन्हें आम व्यक्ति की परिस्थितियों को समझने और लोगों के साथ सहजता से जुड़ने की प्रेरणा दी।

नियमित दिनचर्या और स्वस्थ जीवन

उनकी जीवन शैली में समय का सदुपयोग, नियमित दिनचर्या, योग और आत्मअनुशासन को विशेष महत्व दिखाई देता है। व्यस्त साईलनिक जीवन के बावजूद वे अपने स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के प्रति सजग रहने का प्रयास करते हैं।

दृढ़ स्वभाव और स्पष्ट विचार

स्वभाव की दृष्टि से वे अनुशासित, कर्मठ, स्पष्ट विचारों वाले और लक्ष्य के प्रति दृढ़ व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना और अपने संकल्प पर निरंतर आगे बढ़ना उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं में माना जाता है।

कर्म और समाज के प्रति समर्पण

उनके जीवन से यह प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति की पहचान उसके पद या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसके कर्म, व्यवहार और समाज के प्रति उसके समर्पण से होती है।

प्रेरक संदेश

“सादगी जीवन को ऊँचाई देती है, अनुशासन उसे दिशा देता है और निरंतर कर्म सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।”

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन https://youtu.be/p-uHSPnXzWw?si=kh3DQoQ_KkSg579m

दिनांक 24.9.26



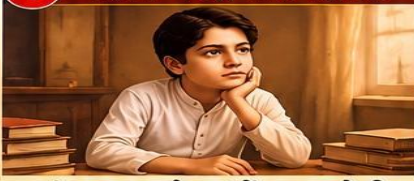
नमो कहानी

स्वामी विवेकानंद

तपस्वी संन्यासी की प्रेरक कहानी

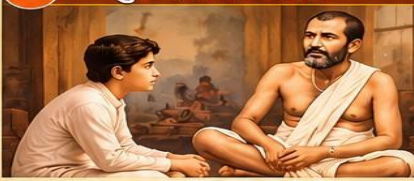
“त्याग, तपस्या, आत्मसंयम और राष्ट्रसेवा का अद्वितीय उदाहरण”

1 बालक नरेंद्र की जिज्ञासा



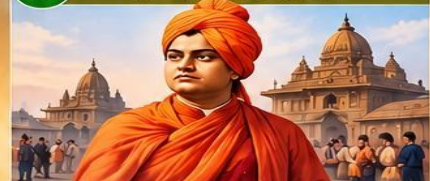
नरेंद्रनाथ दत्त के मन में बचपन से ही सत्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा थी। वे केवल पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करके संतुष्ट नहीं होते थे। वे जानना चाहते थे — “क्या ईश्वर को वास्तव में देखा जा सकता है?”

2 गुरु से मिला मार्ग



इसी सत्य की खोज उन्हें श्रीरामकृष्ण परमहंस के पास ले गई। गुरु के सानिध्य में नरेंद्रनाथ ने आध्यात्मिक साधना, आत्मसंयम और ईश्वर के प्रति समर्पण का मार्ग सीखा।

3 संन्यास का जीवन



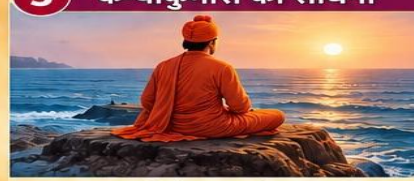
गुरु के महाप्रयाण के बाद उन्होंने सांसारिक सुख-सुविधाओं का त्याग कर संन्यास का जीवन स्वीकार किया और **स्वामी विवेकानंद** बने।

4 भारत भ्रमण की तपस्या



उन्होंने भारत के गाँवों, नगरों और तीर्थों की पैदल यात्रा की। अनेक बार उन्हें भोजन नहीं मिला, रहने का स्थान नहीं मिला, फिर भी उनका संकल्प नहीं टूटा। वे कठिन परिस्थितियों में भी **देयान, साधना और आत्मचिंतन** करते रहे।

5 कन्याकुमारी की साधना



कन्याकुमारी में समुद्र के मध्य शिला पर ध्यान करते हुए उन्होंने भारत की गरीबी, अशिक्षा और पीड़ा को दूर करने का संकल्प लिया। उनकी तपस्या केवल व्यक्तिगत मोक्ष के लिए नहीं थी; वह **मानवता और राष्ट्र की सेवा** के लिए थी।

6 विश्वधर्म संमेलन में भारत का गौरव



1893 में वे अमेरिका के शिकागो में विश्व धर्म संमेलन में पहुँचे। वहाँ उनके ऐतिहासिक संबोधन ने भारतीय संस्कृति और वेदांत की महानता का संदेश पूरी दुनिया तक पहुँचाया।

7 तप का सच्चा अर्थ



स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सच्चा तप केवल जंगल में बैठकर साधना करना नहीं, बल्कि अपने अहंकार, आलस्य और स्वार्थ पर विजय प्राप्त करके मानवता की सेवा करना है।

प्रेरक संदेश

“जिसके भीतर दृढ़ संकल्प, आत्मसंयम और सेवा की भावना हो, उसकी तपस्या समाज और राष्ट्र के लिए शक्ति बन जाती है!”



नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन:- <https://youtu.be/feuE88CfGjg?si=xdL9nfmctHnvuvBx>

दिनांक 25.9.2026



नमो कहानी

सोमनाथ

आस्था, स्वाभिमान और संकल्प

सोमनाथ की गौरवगाथा

सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भारत की अटूट आस्था, सांस्कृतिक चेतना और पुनर्निर्माण की शक्ति का प्रतीक है। सदियों के संघर्ष के बाद भी सोमनाथ बार-बार उठ खड़ा हुआ और आज भी अपनी भव्यता के साथ भारत की सनातन परंपरा का संदेश देता है। स्वतंत्रता के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प से इसके पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ और 11 मई 1951 को राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने पुनर्निर्मित मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की।

मोदी जी का विशेष जुड़ाव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का सोमनाथ से विशेष जुड़ाव रहा है। वे श्री सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं और मंदिर के विकास, तीर्थ सुविधाओं तथा विरासत संरक्षण को आगे बढ़ाने पर लगातार बल देते रहे हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व – जनवरी 2026

जनवरी 2026 में मोदी जी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में भाग लिया। इस अवसर पर 72 घंटे का ओंकार मंत्र जाप और 108 घोड़ों के साथ शौर्य यात्रा जैसे कार्यक्रम हुए, जिनका उद्देश्य सोमनाथ की हजार वर्षों की आस्था, संघर्ष और सांस्कृतिक निरंतरता को स्मरण करना था।

सोमनाथ अमृत महोत्सव – मई 2026

मई 2026 में पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित सोमनाथ अमृत महोत्सव में भी मोदी जी ने भाग लिया। उन्होंने सोमनाथ को भारत की अविचल आस्था और सध्यतागत शक्ति (resilience) का प्रतीक बताया तथा “विकास भी, विरासत भी” की भावना को आगे बढ़ाने पर जोर दिया।

प्रेरक संदेश

“ सोमनाथ हमें सिखाता है कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, आस्था, आत्मविश्वास और संकल्प के साथ राष्ट्र अपनी विरासत को पुनः प्रतिष्ठित कर सकता है। नरेंद्र मोदी जी का सोमनाथ से जुड़ाव इसी सांस्कृतिक स्वाभिमान, सेवा और विरासत संरक्षण की भावना को आगे बढ़ाने का एक प्रसंग है। ”

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन :- <https://youtu.be/7WrVdvETKA?si=rFgcT8uQSnyFsY2m>

दिनांक 26.9.2026



❀ नमो कहानी ❀

विवेकानंद की प्रेरणा, नरेंद्र का संकल्प

राष्ट्रसेवा की ओर एक यात्रा

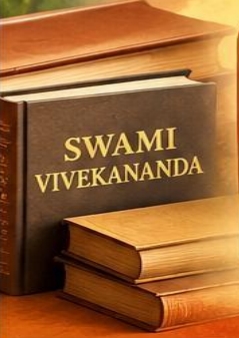
- नरेंद्र नाम का एक बालक गुजरात के छोटे से नगर **वडनगर** में साधारण परिस्थितियों में बड़ा हो रहा था। वह पुस्तकें पढ़ता, चिंतन करता और समाज तथा देश के लिए कुछ करने का **सपना** देखता था।
- जब नरेंद्र ने **स्वामी विवेकानंद के विचारों और साहित्य** को पढ़ना शुरू किया, तो उनके जीवन को एक नई दिशा मिली। स्वयं नरेंद्र मोदी ने बाद में बताया कि स्वामी विवेकानंद के विचारों ने उन्हें **साहस, दृष्टि और जीवन का उद्देश्य** समझने में मदद की।
- स्वामी विवेकानंद का संदेश था कि युवा केवल अपने लिए न जिए, बल्कि **राष्ट्र और समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करे**। उनके विचारों में आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण, राष्ट्रप्रेम और मानव सेवा को विशेष स्थान प्राप्त था।
- नरेंद्र के मन में यह विचार गहराई से बैठ गया कि जीवन की वास्तविक सफलता केवल स्वयं आगे बढ़ने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में **सकारात्मक परिवर्तन लाने में है**।
- युवावस्था में नरेंद्र मोदी ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की। इन यात्राओं ने उन्हें **भारत की विविधता, संस्कृति और सामान्य जनजीवन** को निकट से समझने का अवसर दिया। आगे चलकर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में स्वयं को सेवा और संगठन के कार्य के लिए समर्पित किया।
- स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने युवाओं में आत्मविश्वास, राष्ट्रनिर्माण और सेवा की भावना को बार-बार महत्व दिया। प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने युवाओं से विवेकानंद जी के संदेश— **“Believe in yourself”** — तथा **साहस, चरित्र और नेतृत्व** के मूल्यों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया है।
- वर्षों बाद जब नरेंद्र मोदी **बेलूर मठ** पहुँचे, तो उन्होंने इस स्थान को अपने लिए अत्यंत आत्मीय बताया। उन्होंने स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परंपरा के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की और सेवा के मार्ग को अपने जीवन की प्रेरणा से जोड़ा।

❀ प्रेरक संदेश ❀

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को आत्मविश्वास, चरित्र और सेवा का संदेश दिया। नरेंद्र मोदी ने इन विचारों को अपने सार्वजनिक जीवन में सेवा और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प से जोड़ने का प्रयास किया।

➤ कठिन परिस्थितियाँ व्यक्ति की दिशा नहीं रोक सकती, यदि उसके भीतर लक्ष्य, आत्मविश्वास और सेवा का संकल्प हो।

“पहले स्वयं पर विश्वास कीजिए, फिर अपने उद्देश्य को जीवन का संकल्प बनाइए।”



नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन :- <https://youtu.be/GIV3eIMu9C0?si=Qm78z2pnUWkrDMih>

दिनांक 28.9.2026



नमो कहानी

कोरोना से लड़ाई – संकट में सेवा और आत्मबल

कोरोना महामारी का दौर मानवता के लिए एक कठिन परीक्षा था। इस चुनौती के समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सावधानी, अनुशासन और सामूहिक जिम्मेदारी के साथ देशवासियों को इस संकट का सामना करने का आह्वान किया।

इस कठिन समय का एक आध्यात्मिक संदेश भी था—जब बाहरी परिस्थितियाँ हमारे नियंत्रण में न हों, तब आत्मसंयम, धैर्य, विश्वास और सेवा-भाव ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति बनते हैं।

“जान है तो जहान है” की भावना के साथ लोगों ने अपने घरों में रहकर संयम अपनाया। दीप जलाने और सामूहिक प्रार्थना जैसे आह्वानों ने कठिन समय में आशा, एकता और सकारात्मकता का भाव जगाया।

कोरोना काल में डॉक्टरों, नर्सों, सफाईकर्मियों, पुलिसकर्मियों और स्वयंसेवकों ने मानव सेवा को अपना कर्तव्य बनाया। यह हमें भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के “सेवा ही मानवता है” और “नर सेवा ही नारायण सेवा है” के भाव की याद दिलाता है।

प्रेरक संदेश

संकट हमें केवल संघर्ष करना नहीं सिखाता, बल्कि भीतर की शक्ति को पहचानना भी सिखाता है। आत्मबल, अनुशासन, करुणा और सेवा-भाव से मानवता हर कठिन परिस्थिति में प्रकाश की ओर आगे बढ़ सकती है।

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन :-

<https://youtu.be/3xorBQsnL4M?si=8eNEtqz5gGJFHHZV>

दिनांक 29.9.2026

नमो कहानी

स्वामी विवेकानंद

संकल्प से सफलता तक

1 जिज्ञासु और निभीक बालक



स्वामी विवेकानंद का बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। बचपन से ही वे जिज्ञासु, निभीक और सत्य की खोज करने वाले थे। वे हर बात को तर्क और अनुभव की कसौटी पर परखना चाहते थे।

2 गुरु से मिली नई दिशा



जब उनका परिचय श्री रामकृष्ण परमहंस से हुआ, तो उनके जीवन को नई दिशा मिली। रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र के भीतर छिपी आध्यात्मिक शक्ति और मानव सेवा की भावना को पहचाना लिया। आगे चलकर नरेंद्रनाथ ने संन्यास ग्रहण किया और वे स्वामी विवेकानंद के रूप में प्रसिद्ध हुए।

3 भारत भ्रमण और राष्ट्रसेवा का संकल्प



भारत भ्रमण के दौरान उन्होंने देश की गरीबी, कठिनाईयों और सामान्य जनजीवन को बहुत करीब से देखा। इससे उनके मन में भारत के उत्थान और समाजसेवा का संकल्प और मजबूत हुआ। उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति समर्पण का संदेश दिया।

4 शिकागो में ऐतिहासिक संबोधन (1893)



1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक संबोधन से उन्होंने भारतीय संस्कृति और वेदांत की महान परंपरा को विश्व के सामने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनके विचारों ने भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के युवाओं को प्रेरित किया।

कहानी से प्रेरणा

- आत्मविश्वास रखें।
- सत्य की खोज करें।
- समाज और राष्ट्र की सेवा करें।
- कठिन परिस्थितियों से धबराए नहीं, दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें।
- अपने भीतर की शक्ति को पहचानें।

नमो संदेश

युवाशक्ति जब आत्मविश्वास, संस्कार और राष्ट्रसेवा से जुड़ती है, तो वही शक्ति भारत के उज्ज्वल भविष्य और राष्ट्र निर्माण का आधार बनती है।



नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन

https://youtu.be/s8_qdY3ebB8?si=XDJWW0v7l9XgoxEv

दिनांक 30.9.26

नमो कहानी

नरेंद्र मोदी पितामह

अनुभव और मार्गदर्शन

1 पिता से मिली पहली सीख
वड़नगर में परिवार की चाय की दुकान पर पिता **दामोदरदास मुलचंद मोदी** के साथ हाथ बंटाते हुए नरेंद्र ने बचपन में ही श्रम, जिम्मेदारी, सादगी और आत्मनिर्भरता के संस्कार सीखे।
पिता का संघर्ष उनके लिए जीवन की पहली पाठशाला बना।

2 विचारों से मिला मार्गदर्शन
स्वामी विवेकानंद के साहित्य और विचारों ने उनके चिंतन की गहराई से प्रभावित किया। विवेकानंद जी से उन्हें राष्ट्रसेवा, आत्मअनुशासन और समाज के प्रति समर्पण की प्रेरणा मिली।
“उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त तक रुको मत।” — स्वामी विवेकानंद

3 संघर्ष से संकल्प तक
साधारण परिवेश, सीमित संसाधन और अनेक **कठिनाइयों** के बीच नरेंद्र मोदी ने निरंतर परिश्रम, अनुशासन और सीखने की लगन के साथ अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाए।

4 सार्वजनिक जीवन की यात्रा
संगठनात्मक कार्य से लेकर गुजरात के मुख्यमंत्री और फिर भारत के प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने यात्रा में उन्होंने अनुभवों और संस्कारों से, बलिक सेवा और राष्ट्रहित की भावना से आगे बढ़ाई।

5 अनुभव और मार्गदर्शन — क्यों “पितामह” ?
भारत के अनेक लोग उनके लंबे अनुभव, राष्ट्रसेवा और जनहित के प्रति समर्पण, अथक परिश्रम तथा समावेशी दृष्टिकोण के कारण उन्हें सम्मानपूर्वक **“पितामह”** के भाव से देखते हैं। यह संबोधन किसी औपचारिक पदवी के रूप में नहीं, बल्कि स्नेह, विश्वास और मार्गदर्शन के प्रतीक के रूप में है। जैसे परिवार में पितामह अपने अनुभव से नई पीढ़ी को दिशा देते हैं, वैसे ही उनके जीवन और अनुभव से अनेक लोग प्रेरणा और मार्गदर्शन ग्रहण करते हैं।

पिता का योगदान — जीवनभर की पूँजी

- श्रम का ईममद ढाला सिखाया
- कठिनाइयों में धैर्य रखना सिखाया
- जिम्मेदारी के भाव से काम करने का स्वभावात दिया
- सादगी और आत्मनिर्भरता का मूल्य समझाया

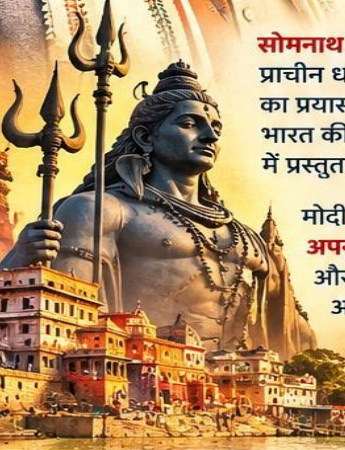
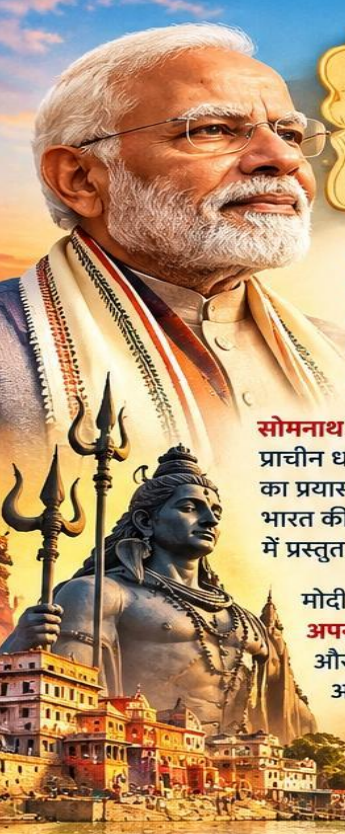
नमो संदेश

- माता-पिता के संस्कार जीवन की सबसे बड़ी ताकत हैं।
- अनुभव से सीखिए, उसे समाजहित में उपयोग कीजिए।
- संघर्ष से मत घबराइए, हर चुनौती एक नई सीख देती है।

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन :- <https://share.google/MZrsKvXplxdQyBI7j>

दिनांक 1.10.26



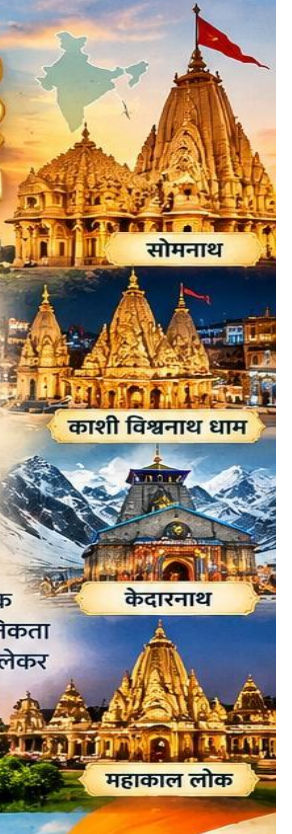
नमो कहानी

धार्मिक विरासत – आस्था से आत्मगौरव तक

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत केवल मंदिरों, तीर्थों और प्राचीन परंपराओं में नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था और जीवन-मूल्यों में भी बसती है। **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी** ने अपने सार्वजनिक जीवन में भारत की इस विरासत को सम्मान और संरक्षण से जोड़ने पर विशेष बल दिया है।

सोमनाथ मंदिर से लेकर **काशी विश्वनाथ धाम**, **केदारनाथ** और **महाकाल लोक** तक, प्राचीन धार्मिक स्थलों के विकास और संरक्षण को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इन स्थलों को केवल पर्यटन के केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि भारत की सभ्यता, आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मोदी जी के लिए धार्मिक विरासत का अर्थ केवल अतीत को याद करना नहीं, बल्कि **अपनी जड़ों से जुड़कर भविष्य का निर्माण करना** भी है। उनका संदेश है कि आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं; भारत अपनी प्राचीन संस्कृति को साथ लेकर आधुनिक विकास की ओर बढ़ सकता है।



सोमनाथ
काशी विश्वनाथ धाम
केदारनाथ
महाकाल लोक

विकसित भारत की तस्वीर

एक ऐसा भारत—जहाँ प्राचीन विरासत सुरक्षित हो, तीर्थस्थल आधुनिक सुविधाओं से जुड़ें, शहर आधुनिक हों, युवा सशक्त हों, तकनीक आगे बढ़े और विकास के साथ संस्कृति एवं पर्यावरण का भी सम्मान हो।



धरोहर संरक्षित



बेहतर कनेक्टिविटी



आधुनिक शहर



डिजिटल तकनीक



सशक्त युवा



स्वच्छ और हरित विकास



प्रेरक संदेश

“जो समाज अपनी विरासत का सम्मान करता है, वही आत्मविश्वास के साथ अपने भविष्य का निर्माण करता है।”

नमो संदेश

आस्था हमारी शक्ति है,
विरासत हमारी पहचान है
और सेवा उसका श्रेष्ठ माध्यम है।

नमो कहानी वाचन

वृत्त चित्र प्रदर्शन <https://youtu.be/AtIol3UOvM?si=5qkMqFU5R6ZoJdcC>

नोट: हर पृष्ठ पर दर्शाई गई वेबलिंग महाविद्यालय की छात्राओं को कक्षा में दिखाई गई।

